सुवर्ण गौरी साधना

जो अति आनन्द, वैभव, अक्षय धनदात्री, सौभाग्य प्रदात्री देवी है

जीवन में उत्साह, आनन्द, निरन्तर सफलता मिलने से, कार्य सिद्धि होने से तथा पारिवारिक सुख शान्ति, अनुकूलता से ही प्राप्त होता है, ''सुवर्ण गौरी'' आनन्द की देवी है, जो एक बार सिद्ध हो जाने पर साधक के जीवन में हर समय अपना प्रभाव देती रहती है, ''सुवर्ण गौरी साधना'' जीवन के रेगिस्तान में अमृत कुण्ड के समान है।

साधक जब साधना के क्षेत्र में प्रवेश करता है, तो उसका प्रथम लक्ष्य साधना में तत्काल सफलता प्राप्त कर, अपने जीवन की विसंगतियों को हटा कर जीवन में एक नवीनक्रम का निर्माण करना होता है, साधक की यही इच्छा रहती है, कि उसे अपने जीवन का आनन्द पूर्ण रूप से प्राप्त हो, अपने कार्यों में तात्कालिक सफलता मिले, यदि वह पुरुष हो तो सदैव यही चाहता है, कि उसका गृहस्थ जीवन विशिष्ट हो, पत्नी विचारों के अनुकूल, उसकी सहयोगी और उसे पूर्ण आनन्द प्रदान करने वाली हो, इसी प्रकार प्रत्येक स्त्री यही चाहती है, कि उसका पति, पति होने के साथ-साथ उसका मित्र भी हो, जो उसकी भावनाओं को पूर्ण रूप से समझे, उसके जीवन में कमी न आने दे और श्रेष्ठ संतान हो, जीवन बढ़ने के साथ-साथ सुख बढ़ता रहे।

सुवर्ण गौरी साधना

पूज्य गुरुदेव की लीला को भी हर कोई समझ नहीं पाता है, जब वे अपने मूड में होते हैं, तो फिर बात ही कुछ और बनती है, यदि 'दुर्गा' के संबंध में कुछ बोलने का उनका मूड आता है, तो वे इस संबंध में हजारों मंत्रों सहित ऐसी साधनाएं, ऐसा ज्ञान प्रकट करते हैं, कि आश्चर्य शब्द भी छोटा पड़ जाता है, कृष्ण के संबंध में उनका व्याखान, उनका ज्ञान शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है, एक बार उनके एक प्रिय शिष्य ने कहा, कि गुरुदेव मेरे जीवन में उत्साह नहीं है, मैं कोई भी काम करने का विचार करता हूं, तो मुझे पहले असफलता का ही ध्यान आता है, जिन लोगों को मैंने बार-बार सहयोग दिया, उनसे समय पड़ने पर थोड़ा भी सहयोग

मांगता हूं, तो वे लोग कन्नी काट जाते हैं, घर-परिवार के लोग भी असंतुष्ट ही रहते हैं, और तो और मेरी पत्नी भी मुझे नकारा-बेकार समझती है, हम दोनों के विचारों में कोई ताल-मेल नहीं है, मेरे लिए सुबह कोई नया उत्साह नहीं लेकर आती है।

शिष्य ने पूछा मैंने ऐसे कौन से दोष किये हैं कि मेरे जीवन में ऐसी स्थिति बन गई है? क्या इसका कोई उपाय है, अथवा मुझे अपना जीवन इसी प्रकार काटना पड़ेगा?

इस बार गुरुदेव ने कहा कि तुम जो कह रहे हो, वह केवल तुम्हारे ऊपर ही लागू नहीं होता है, जीवन जीना और काटना दोनों अलग-अलग बातें हैं, सौ में अस्सी लोग तो जीवन का भार उठाते हुए चल रहे हैं, कभी-कभी कोई प्रसन्नता की किरण आ जाती है, इसमें दोष तो उसका खुद का ही है, साधना में सबसे पहले आवश्यकता इस बात की है, कि जीवन में उत्साह का निर्माण हो, हर सुबह नवीन लगे, मन में आनन्द की लहर बने।

पूज्य गुरुदेव ने सुवर्ण गौरी साधना का जो विधान बताया, और जिन शिष्यों ने इसे सामान्य रूप से सम्पन्न करके भी अपने जीवन को एक नया आयाम दिया, उसके बारे में बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

सुवर्ण गौरी रहस्य

'सुवर्ण गौरी' शक्ति का सौभाग्य स्वरूप है, जो कि अप्सरा वर्ग में आती है, सुवर्ण गौरी का विशेष नाम 'शिवदूती' भी है, जो कि भगवान शिव की कृपा एवं वर प्राप्त कर अपने सर्वांग स्वरूप में प्रिया है 'आनन्द मंदाकिनी' शिव की शक्तियों के संबंध में एक प्रामाणिक ग्रंथ है, जिसमें इस साधना के संबंध में पूर्ण विधि-विधान सहित लिखा गया है, इस ग्रंथ में सुवर्ण गौरी के स्वरूपों के संबंध में लिखा है कि इसके सोलह स्वरूपों की सिद्धि जो साधक प्राप्त कर लेता है, वह संसार का अधिपति होने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है, सुवर्ण गौरी के ये सोलह स्वरूप है -

1. अमृताकर्षणिका,
2. रूपाकर्षणिका,
3. सर्वासाधिनी,
4. अनंगकुसुमा,
5. सर्वदुखविमोचनी,
6. सर्वसिद्धिप्रदा,
7. सर्वकामप्रदा,
8. सर्वविघ्ननिवारणी,
9. सर्वस्तम्भनकारिणी,
10. सर्वसम्पत्तिपूर्णी,
11. चित्ताकर्षणिका,
12. कामेश्वरी,
13. सर्वमंत्रमयी,
14. सर्वानन्दमयी,
15. सर्वेशी,
16. सर्ववाशिनी।

इन सोलह स्वरूपों में से यदि एक स्वरूप की सिद्धि भी प्राप्त हो जाए, तो जीवन का अंधकार दूर हो जाता है, आगे साधना क्रम में सम्पूर्ण रूप से पूजन का विधान दिया जा रहा है, यदि कोई साधक किसी एक विशेष स्वरूप की ही साधना करना चाहता है, तो उसे भी कर सकता है।

प्रिया का तात्पर्य है, जो आपको प्रिय हो, जिसके कहे अनुसार आप कार्य करें, जिसका अहसास आपको आनन्द का अनुभव दे, जो आपके जीवन में उत्साह भरे, आपकी कमियों को हटाए, और आपके प्रति समर्पण का भाव हो।

'आनन्द मंदाकिनी' ग्रंथ में लिखा है, कि सुवर्ण गौरी साधना सम्पूर्ण रूप से तो सिद्ध प्रिया रूप में ही हो सकती है, तब यह विशिष्ट शक्ति जीवन में हर स्थिति में आपके कार्यों को उचित परिणाम, अभीष्ट फल प्राप्त करा सकती है, सिद्धि होने पर आपको हर समय यह ध्यान रहता है, कि यह शक्ति आपकी सहयोगी रूप में विद्यमान है और अपनी इच्छाओं की पूर्ति का सरल, सहज मार्ग प्राप्त कर सकते है।

ज्यादातर व्यक्ति प्रेम और काम को एक ही रूप में देखते हैं, सोचते हैं, जो कि बिलकुल गलत है, प्रेम मन की अभिव्यक्ति है, और काम शरीर की अभिव्यक्ति, और मन हमेशा शरीर से ऊपर है इस कारण सुवर्ण गौरी साधना, काम वासना भाव से कभी भी सिद्ध करने का प्रयास न करें, इसे प्रेम भाव से प्रिया रूप में ही सिद्ध करने का प्रयास करें।

साधना विधान

यह साधना सायंकाल के पश्चात् की जाने वाली साधना है, और सोमवार को सम्पन्न करनी चाहिए, साधना के लिए आवश्यक है कि चित्त में प्रसन्नता, उत्साह का भाव होना चाहिए।

इस साधना के लिए **'सुवर्ण गौरी यंत्र', 'सोलह सिद्ध शक्ति काम्य फल'** तथा **'सुवर्ण गौरी अनंग माला'** आवश्यक है, साधना में पीले रंग का प्रयोग विशेष रूप से होता है, अतः साधक-साधिका पीले रंग की धोती धारण करें, पीले रंग के आसन पर बैठ कर साधना करें।

इसके अतिरिक्त साधना हेतु शुद्ध घी का दीपक, अष्टगंध, सिन्दूर, चन्दन, केवड़ा मिश्रित सुगंधित जल, चावल, पीले पुष्प, ताम्रपात्र, नैवेद्य हेतु लड्डू इत्यादि की व्यवस्था पहले से कर लें, पूजा स्थान में अर्थात् जहां आप साधना कर रहे हैं, वहां घी का दीपक तथा सुगंधित अगरबत्तियां जला दें, अपने आसन पर बैठ कर पूर्व दिशा की ओर मुंह करें तथा सामने एक पात्र में **'सुवर्ण गौरी यंत्र'** स्थापित करें, और सुवर्ण गौरी का ध्यान करते हुए आह्वान करें, यह मूल रूप से सुवर्ण गौरी का स्वागत मंत्र है –

स्वागत मंत्र

गौरी दर्शनमिच्छन्ति देवाः स्वामीष्टसिद्धये।
तस्ये ते परमेशायै स्वागतं स्वागतं च ते।।
कृतार्थोनुग्रहीतोस्मि सकलं जीवितं मम।
आगता देवि देवेशि सुस्वागतमिदं पुनः।।

इस स्वागत मंत्र का पांच बार जोर-जोर से उच्चारण कर **'सुवर्ण गौरी यंत्र'** पर अष्ट गंध, सिन्दूर, चन्दन, इत्र, पीले पुष्प चढ़ायें और सामने एक पात्र में नैवेद्य अर्पित करें, यदि आपके पास सोने की अंगूठी अथवा कोई स्वर्ण आभूषण हो तो **'सुवर्ण गौरी यंत्र'** के सामने उस पात्र में आभूषण को धो कर रखना चाहिए।

अब एक-एक कर सोलह सिद्ध शक्ति काम्य फल स्थापित करें, ये स्वर्ण गौरी के सोलह शक्ति स्वरूप हैं, इस हेतु सोलह चावल की ढेरी बना कर प्रत्येक शक्ति का नाम लें और आह्वान करते हुए एक-एक 'सिद्ध शक्ति काम्य फल' स्थापित करें –

ॐ सुवर्ण गौरी अमृताकर्षणिका पूजयामि नमः।
ॐ सुवर्ण गौरी रूपाकर्षणिका पूजयामि नमः।
ॐ सुवर्ण गौरी सर्वासाधिनी पूजयामि नमः।
....
....
....क्रमशः

इस प्रकार प्रत्येक शक्ति का आह्वान करते हुए सुवर्ण गौरी सिद्ध शक्ति काम्य फल स्थापित करें और प्रत्येक शक्ति पर पुष्प, इत्र, चावल, चढ़ाएं।

जब यह स्थापना क्रम पूरा हो जाए तो सात दीपक जायें तथा सुवर्ण गौरी मंत्र का जप अनंग माला से प्रारंभ करें।

सुवर्ण गौरी मंत्र

यं क्षं ह्रीं सुवर्ण गौरी सर्वान्कामान्देहि
यं कुं ह्रीं युं नमः।।

अब इस मंत्र की सात माला जप करना है और जप प्रारंभ करने से पहले दायें हाथ में जल ले कर संकल्प लें, **'त्रैलोक्यमोहने चक्रे इमाः प्रकट सुवर्ण गौरी'** इस प्रकार प्रत्येक माला मंत्र जप के पश्चात् यह संकल्प जल लेकर करना है, जब सात माला मंत्र जप पूरा हो जाय, तो एक थाली में सात दीपक ले कर आरती सम्पन्न करें तथा प्रसाद ग्रहण करें।

साधना क्रम के विधान में यह आवश्यक है कि साधक रात्रि को वही भूमि पर शयन करें, कई साधकों को तो प्रथम बार साधना में ही रात्रि में विशेष अनुभूति होती है, स्वप्न एक साकार रूप में सिद्ध होकर सुवर्ण गौरी उपस्थित हो सकती है।

यह साधना तीन सोमवार तक नियमित रूप से अवश्य करना चाहिए, प्रत्येक साधना क्रम में सुन्दर अनुभव प्राप्त होता है, एक बार सुवर्ण गौरी सिद्ध होने पर पूरे जीवन भर सहयोग प्राप्त होता रहता है, साधक के मन में एक प्रिय भाव हमेशा बना रहना चाहिए, जो साधक सिद्धि प्राप्त होने पर गर्व, घमंड अभिमान से भर जाते हैं और गलत कार्यों की कामना करने लगते हैं, उनकी सिद्धि उतनी ही शीघ्र नष्ट भी हो जाती है।

सुवर्ण गौरी साधना तो, साधना मन उपवन का ऐसा सुगंधित पुष्प है, जिसकी आनन्द गंध एक बार पूर्ण रूप से प्राप्त हो जाए, तो पूरे जीवन प्राणों में आनंद का संचार हो जाता है।

साधना सामग्री-600/